www.thearyasamaj.org

वर्ष-११ अंक-२ २७ अक्टूबर २०१३

ओ३म्

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रमुख पत्र

वैदिक रवि

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव ।
यद् भद्रं तन्न आ सुव ॥

www.thearyasamaj.org

अथेश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासना:

१. ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रं तन्न आ सुव ।।

(यजु. ३०।३)

२. ओ३म हिरण्यगर्भ: समवर्त्तताग्रे भूतस्य जात: पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

(यजु. २५।१०)

३. ओ३म् य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवा:।
यस्यछायाऽमृतं यस्य मृत्यु: कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।

(यजु. २५ ।१३)

४. ओ३म् य: प्राणतो निमिषतो महित्वैकऽ इद्राजा जगतो बभूव ।
य ईशेऽ अस्य द्विपदश्चतुष्पद: कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।

(यजु. ३५ ।१२)

५. ओ३म् येन द्यौरूग्रा पृथिवी च दृढा येन स्व स्तभितं येन नाक: ।
यो अन्तरिक्षे रजसो विमान: कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।

(यजु. ३२ ।६)

६. ओ३म् प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव ।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ।।

(ऋ सं. १० ।सं. १२१ मं. १०)

७. ओ३म् स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा ।
यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त ।

(यजु. ३२।१०)

८. ओ३म् अग्ने नय सुपथा रायेऽअस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भुयिष्ठान्ते नमऽउक्तिम् विधेम ।।

(यजु. ४० ।१६)

www.thearyasamaj.org

ओ३म्
वैदिक-रवि
मासिक

वर्ष-११ अंक-२

२७ अक्टूबर २०१३
(सार्वदेशिक धर्मार्थ सभा के निर्णयानुसार)
सृष्टि सम्वत् १९७,२९,४६,११४
विक्रम संवत् २०६९
दयानन्दाब्द १८४

सलाहकार मण्डल
राजेन्द्र व्यास
पं.रामलाल शास्त्री 'विद्या भास्कर'
डॉ. रामलाल प्रजापति
वरिष्ठ पत्रकार

प्रधान सम्पादक
श्री इन्द्रप्रकाश गांधी
कार्या.फोन: ०७५५ ४२२०५४९

सम्पादक
प्रकाश आर्य
फोन: ०७३२४२२६५६६

सह-सपादक
मुकेश कुमार यादव
फोन: ९८२६१८३०९५

सदस्यता
एक प्रति- २०-०० रू.
वार्षिक-२००-०० रू.
आजीवन-१०००-०० रू.

विज्ञापन की दरें

आवरण पृष्ठ २ एवं ३	५०० रू.
पूर्ण पृष्ठ (अंदर)	-४००रू
आधा पृष्ठ (अंदर का)	२५० रू.
चौथाई पृष्ठ	१५० रु

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	पृष्ठ
१	संपादकीय	१
२	दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं	२
३	प्रदर्शन से लुप्त होता दर्शन	३
४	संसार में दु:ख कोई नहीं चाहता परन्तु विडम्बना	५
५	ज्ञान विज्ञान की खोज और भारतीय विद्वान	८
६	तीर्थ स्नान क्या?	९
७	कौन बड़ा	१३
८	दीपावली पर्व	१४
९	महर्षि दयानन्द सरस्वती	१६
१०	गो मूत्र के सरलतम घरेलू औषधीय उपयोग	२०
११	बाल सन्देश स्तंभ	२१
१२	अन्तर्राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान माधव बाग...	२३
१३	आर्य वीर दल प्रशिक्षण	२४

नवम्बर माह के पर्व, त्यौहार, दिवस

1 नवम्बर	- धनवंतरी जयंती (धन तेरस)
3 नवम्बर	- दीपावली,महर्षिक दयानंद निर्वाण दिवस
6 नवम्बर	- विश्वामित्र जयंती
7 नवम्बर	- गुरू गोविन्द सिंह पुण्य तिथि
14 नवम्बर	- प. जवाहरलाल नेहरू जयंती (बाल दिवस)
17 नवम्बर	- गुरू नानकदेव जयंती, लाल लाजपतराय बलिदान दिवस
19 नवम्बर	- रानी लक्ष्मीबाई जयंती,इन्दिरा गांधी जयंती
22 नवम्बर	- वीरांगना झलकारी जयंती
24 नवम्बर	- गुरू तेज बहादुर शहीद दिवस
26 नवम्बर	- डॉ.हरी सिंह गौर जयंती

पत्रिका में प्रकाशित विचार,सामग्री से सम्पादक मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
किसी भी विवाद के लिए न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा।

www.thearyasamaj.org

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ

दीप

नन्हें दीपक ने ज्यों,
अन्धकार को ललकारा है।
बढ़ती दानवता ने आज,
मानवता को नकारा है।।

निराशा संस्कृति नहीं हमारी,
विश्वास ही इतिहास हमारा है।
ऐ सोने वालो जागो,
आने वाला कल तुम्हारा है।।

"सर्वे भवन्तु सुखिनः" को,
जीवन सन्देश बना डालो।
जितने बुझे पड़े हैं दीप,
उठकर सारे जला डालो।।

— प्रकाश आर्य, महू

दीपावली के ज्योति पर्व पर परमात्मा आप सबके हृदय ज्ञान प्रकाश से आलौकित कर दे, सुख समृद्धि स्वास्थ प्रदान करें, ऐसी प्रार्थना है। दीपोत्सव मंगलमय हो।

विनीत :

समस्त कार्यकारिणी सदस्य एवं पदाधिकारीगण

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, भोपाल

www.thearyasamaj.org

सम्पादकीय –

प्रदर्शन से लुप्त होता दर्शन

प्रदर्शन किसी भी वस्तु, व्यक्ति, विचार का बाहरी स्वरूप है और दर्शन आन्तरिक।

किसी भी वस्तु, विचार, व्यक्ति, स्थान की ऊपरी पहचान प्रदर्शन से अवश्य होती है किन्तु मात्र प्रदर्शन से उसकी पूर्णता नहीं होती है उस प्रदर्शन के पीछे छिपा दर्शन ही उसका मूल होता है। जैसे नारियल, बादाम, अखरोट का दर्शनीय रूप और है लेकिन वास्तव में उपयोगिता उसके अन्दर छिपे पदार्थ से है।

समाज आज इस मूल्यवान विचार से भटक गया है और इसीलिए उसका परिणाम जो वह सोचता है, जैसा वह चाहता है वैसा प्राप्त न होते हुए विपरीत ही रहता है। जब मनुष्य दर्शन से दूर रहता है तो ही वह प्रदर्शन तक सीमित रह जाता है और यथार्थ उपयोगिता से दूर जाता है। प्रायः आज हमने एक धार्मिक व्यक्ति की पहचान उसके ज्ञान, बुद्धि, संयम, तपस्या और दिनचर्या से जो उसकी कसौटी उसका महत्व हैं उन्हें न देखते हुए मात्र उसके वस्त्र, कंठी माला तिलक दाड़ी और बेशकीमती विलासिता से युक्त जीवन बड़े आश्रमों को ही मान लिया है। मनुष्य बाहरी स्वरूप के प्रति दिल से प्रभावित होता है दिमाग से नहीं। किसी को स्वीकार करने, उसे अपनाने या उसे मान्यता देने के पहले यदि दिल और दिमाग दोनों का उपयोग किया जाए तो व्यक्ति प्रदर्शन तक ही नहीं, दर्शन तक पहुंच जाता है।

सोने चांदी का व्यापारी दुकान पर बैठकर जब सोना खरीदता है तो उसके हाथ में आये हुए गहने के बाहरी रूप को देखकर वह प्रभावित नहीं होता है। बाहरी रूप तो उसे सोने की चमक से भी ज्यादा प्रभावित कर सकता है। किन्तु ये बाहरी रूप उस धातु का प्रदर्शन है, भीतरी स्वरूप उसका गुण स्वर्ण है। इसलिए सोना खरीदने के पहले वह कसौटी पर घिसकर, परीक्षण कर उसके मूल दर्शन तक पहुंचता है, तब वह सही वस्तु को प्राप्त करता है।

किन्तु आज समाज प्रदर्शन में ही उलझकर रह गया है। प्रदर्शन में उलझा हुआ समाज, दर्शन से दूर रहकर वास्तविक लाभ से वंचित रह रहा है और भ्रम में जी रहा है। बाहरी प्रदर्शन से ही देश, धर्म और समाज की सेवा का नाटक करने वाले अनेक बहरूपिए करोड़ों–करोड़ों जनता को गुमराह कर ठग रहे हैं और इस कारण गलत विचारधारा और व्यक्तियों को मान्यता प्राप्त हो रही है। इसलिए कहा गया, पहले जानो फिर मानों।

www.thearyasamaj.org

परन्तु जमाना आज पहले बिना सोचे समझे दूसरों की मान्यता को आधार बनाकर पहले मानता है, फिर जानने का प्रयास करता है। आचार्य चाणक्य ने भी मात्र प्रदर्शन को देखकर उसे आत्मसात करने को गलत बताया और कहा मानव के पास परमात्मा ने जो बुद्धि दी है जिसका उपयोग कर सत्य असत्य को तर्क पर जो सही उतरे उसे मानना चाहिए – **"यस्तर्केण अनुसंधन्ते स वेद नेतरः"**

आज समाज में बढ़ती हुई अव्यवस्था का कारण यही है कि हम जो मानते हैं वह वैसा नहीं है जैसा मानना चाहिए।

रावण के चारित्रिक पतन के कारण उसे नीचा दिखाने के लिए उसका सामुहिक रूप से पुतला दहन किया गया। इस दहन के पीछे भावना थी जिसका अपयश है, जिसकी अकीर्ति होती है, वह समाज में मरे हुए के समान होता है **"अकीर्ति सा मृत्यु"**

इसलिए लाखों साल के बाद भी उसके पुतले को बुराई का प्रतीक मानकर दहन किया जाता है। यह इस दहन के पीछे समाज को सन्देश देने का प्रतीक था। किन्तु समाज आज जो बुराई का प्रतीक था उसका पुतला बड़े से बड़ा बनाते है और मनोरंजन का एक और माध्यम उसे बना चुके हैं। इसलिए अतीत में जो दर्शन रावण दहन के पीछे था वह अब प्रदर्शन बनकर रह गया। सीता हरण भी रावण के द्वारा साधू का ऊपरी प्रदर्शन करके ही तो हुआ था। वही परिपाटी आज भी चल रही है। अनेक साधू, सन्त, विद्वान, नेता का बाहरी रूप धारण किए हुए व्यक्ति अनेक प्रकार के घृणित कार्यों में उलझे हैं लेकिन भ्रमित समाज उन्हें अपना आराध्य मानकर पूज रहा है।

दीपावली का त्यौहार प्राचीन पर्व है। कृषि प्रधान देश में नए अन्न की फसल आने पर खुशियॉ मनाकर उस प्रभु का धन्यवाद करने के लिए यज्ञ किया जाता था। अब केवल दीपमाला, फटाखे, मकान की सजावट तक ही इस विचार को समझ रहे हैं तथा कहीं–कहीं जुआं खेलना प्रचलन में आ गया है और दर्शन से दूर हैं। इसलिए किसी भी स्थान, व्यक्ति, विचार और वस्तु के प्रदर्शन पर ही आकर्षित होना बुद्धिमानी नहीं है, प्रदर्शन के पीछे की भावना दर्शन मुख्य है। यदि ऐसा किया जाए तो शोषण, परेशानियों व संकटों से बचा जा सकता है।

प्रकाश आर्य,महू

www.thearyasamaj.org

गतांक से आगे..........

संसार में दुःख कोई नहीं चाहता परन्तु विडम्बना है सुख का मार्ग भी अपनाना नहीं चाहता।

– प्रकाश आर्य, महू

<u>**अस्मिता**</u> – अस्मिता का अर्थ है **"अहं अस्मि इति अस्मिता"** अस्मिता को अमानवीय प्रवृत्ति कहना सही होगा। जहां मैं आ जाता है वहां राक्षसी या पाश्विक प्रवृत्ति आ जाती है।

जीवन में मानवीय कर्मों को तीन श्रेणी में बांटा जा सकता है – स्वार्थ, पुरूषार्थ और परमार्थ।

स्वार्थ में केवल कार्य करने वाले का ही हित होता है पुरूषार्थ अपने परिवार के लिए परमार्थ में दूसरों की भी भलाई का भाव होता है।

सिर्फ अपने लिए जीने वाला स्वार्थी व्यक्ति समाज से उपेक्षित रहता है। यह उपेक्षा अपने आप में अपमान, कुण्ठा को जन्म देती है जो दुःख का कारण होता है।

अहं भाव विवाद व विनाश का कारण होता है जिसमें जो कुछ है मैं हूं, जो है वह मेरा है, मैं ही मैं में व्यक्ति अपनों से, समाज से दूरी बना लेता है। वह किसी अन्य के हितों को क्षति पहुंचाकर भी अपने हित को प्राप्त करने की प्रबल भावना रखता है।

वेद कहता है – अकेला जो अपने लिए सोचता है वह पापी है, जो अकेला खाता है उसके लिए कहा – **"केवलाघो भवति केवलादि"** जो अकेला खाता है वह पाप खाता है। पुण्य का फल सुख और पाप का फल दुःख होता है। इसलिए जहां मैं है, वहां दुःख का ही कारण बनता है।

इसीलिए यज्ञ करते समय आहुति के साथ बार–बार **"इदन्नमम्"** बोला जाता है ताकि मम् का शमन और इदन्नमम् आचरण में आवें।

इदन्नमम् की भावना परमार्थ, सहयोग, संगठन, दान की प्रवृत्ति का द्योतक है। इन सबसे सुख वृद्धि होती है इतिहास के दो महत्वपूर्ण उदाहरण हमारे सामने हैं भगवान राम और भरत के मध्य अयोध्या को लेकर इदन्नमम् की भावना के कारण दोनों का उदाहरण जीवन का आदर्श माना जाता है।

दूसरी ओर दुर्योधन की मैं की जिद ने सनातन संस्कृति व कुल को जो क्षति पहुंचाई उसकी आज भी सर्वत्र निन्दा हो रही है। इसी भावना को देवत्व की भावना जीवन श्रेष्ठता का उदाहरण माना जाता है।

www.thearyasamaj.org

इसीलिए महर्षि दयानन्द ने बताया "प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिए अपितु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।"

मेरा, मेरा करने वाले जीवन के अन्तिम समय में ये दुनिया छोड़ते समय और दुःखी पाए जाते हैं। उनकी अपनी सम्पत्ति धन उनके साथ नहीं जाने का उनको महान क्लेश रहता है। अस्मिता में अहम् भाव, घमण्ड भी आ जाता है। घमण्ड मानव जीवन का बड़ा अवगुण है जो हमेशा कष्ट का ही कारण बनता है। जीवन में घमण्ड जीवन उन्नति का सबसे बड़ा कारण बन जाता है। मानव के पतन का मार्ग है। इसलिए सुखी जीवन हेतु अस्मिता का त्याग करना चाहिए।

दुःख का एक अन्य कारण है : राग – राग का अर्थ लगाव, लिप्तता, मोह, आसक्ति होता है।

राग का भाव उन कारणों से होता है जो मनुष्य को प्रिय हों। क्योंकि उसका भोग उन्हें सुख प्रदान करता है।

योगदर्शन में कहा गया – **"सुखानशयी रागः"** सुख के कारण राग होता है। इसलिए उसके प्रति मोह आसक्ति बन जाती है जिसका विच्छेद दुःख का कारण बनता है।

यही आसक्ति बन्धन का कारण होती है बन्धन दुःख का और निवृत्ति दुःखों से दूर मोक्ष का कारण है। कहा गया –

मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः।
बन्धाय विषयासक्तं मुक्तं निर्विषयं स्मृतम्।।

अर्थ – मन ही मनुष्य के बन्धन और मोक्ष का कारण है विषयासक्त मन बन्धन के लिए और निर्विषय मन मुक्ति का साधन है।

इसी प्रकार वेद मन्त्र में आगे कहा गया –

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजिवेषच्छतं समाः।
एवं त्वपि नान्यथेतोस्ति न कर्म लिप्यते नरे।। इशो.3

अर्थ – मनुष्य इस संसार में धर्मयुक्त वेदोक्त निष्काम कर्मों को करता हुआ ही सौ वर्ष तक जीवित रहने की इच्छा करे। अधर्म, अवैदिक कार्यों में लिप्त न हों।

तुलसी जग में यूं रहो, ज्यूं रसना मुख माहि।
खाती घी और तेल नित, फिर भी चिकनी नाहीं।।

जीवन में किसी भी मनुष्य की समस्त इच्छाओं की कभी पूर्ति नहीं हो सकती। इच्छायें अनन्त हैं, पूर्ति के साधन सीमित हैं। यदि मनुष्य इन

www.thearyasamaj.org

सबकी पूर्ति करने में कई जीवन लगा दे तो भी ये शान्त नहीं हो सकतीं। राजा भर्तृहरि ने लिखा – **"तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णा"** हम जीर्ण हो जावेगें किन्तु ये इच्छायें कभी जीर्ण नहीं होती। लालची व्यक्ति कभी सन्तुष्ट नहीं होता फिर यही असन्तोष ही दुःख का कारण बन जाता है।

एक सुखी जीवन के लिए लालच से दूरी रखना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। क्योंकि लालचवश ही व्यक्ति पथ भ्रष्ट होकर पतित हो जाता है। इसलिए लालच की वृत्ति का नाश होना चाहिए। गिद्ध के इस अवगुण को इसलिए वेद में अनुचित बताते हुए मनुष्य जीवन के लिये त्याज्य बताया गया है।

तेन् त्यक्तेन भुंजीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्।।

उपदेश किया – ऐ मनुष्य, तू सोच ये धन किसका है (अर्थात् तेरा नहीं) तू इसे त्याग भाव से भोग, लालच मत कर और इसमें लिप्त मत हो।

संसार की वस्तुएं भोग के लिए है किन्तु भोग को ही सबकुछ मानना और उसमें लिप्त होना दुःख का कारण है, त्याग भाव से भोग करना हितकर है।

मनुष्य मोह माया में उलझकर स्वयं दुःख के कारणों को बुलाता है, मोह छोड़ना नहीं चाहता और मुसीबत से घबराता भी है।

बन्दर पकड़ने का एक तरीका बना रखा है एक भारी लोहे का घड़ा होता है, जिसका मुंह छोटा होता है, उसमें चने डाल देते हैं। बन्दर उसमें चने देखकर हाथ डाल देता है और अन्दर रख चने हाथ में भरकर मुट्ठी भरकर चने निकालना चाहता है।

घड़े का मुंह छोटा होने से बन्धी मुट्ठी बाहर नहीं निकल पाती। घड़ा भारी होता है, चने का मोह छोड़ना नहीं चाहता, इसलिए घड़े से बन्ध जाता है और इसी कारण चने का मोह उसे पिंजरे में कैद करवा देता है।

आसक्ति दुःख का ही कारण बनती है। इसलिए दुनिया में रहो, भोग करो परन्तु लिप्तता न हो कुछ ऐसे –

दुनियां में आया हूं, दुनियां का तलबगार नहीं।
बजार से गुजरा हूं, मगर खरीददार नहीं।।

इस भावना से ही दुःख से दूर रहा जा सकता है।

कमश ....

www.thearyasamaj.org

हमारे गौरव

ज्ञान विज्ञान की खोज और भारतीय विद्वान

आचार्य चाणक्य – कुटित गोत्रोत्पन्न आचार्य चणक ने अपने पुत्र का नाम विष्णुगुप्त रखा था। कालान्तर में चणक आचार्य के पुत्र आचार्य विष्णुगुप्त चाणक्य के नाम से प्रसिद्ध हुए। इनका जन्म मगध साम्राज्य की राजधानी पाटलीपुत्र में हुआ था। तात्कालीन मगध सम्राट घनानन्द के अत्याचारों के विरूद्ध आवाज उठने के कारण आचार्य चणक को राजबन्दी बना लिया गया। वहीं इनकी मृत्यु हो गई। कुछ दिनों पश्चात इनकी माताजी का भी देहान्त होने के पश्चात विष्णुगुप्त तक्षशिला में आ गये। वहीं अर्थशास्त्र विषय का अध्ययन करके आचार्य बने। उस समय तक्षशिला विश्व के सर्वश्रेष्ठ विद्याकेन्द्र के रूप में विकसित था। यहां एशिया, यूरोप एवं अफ्रिकी महाद्वीपों से छात्र अध्ययनार्थ आया करते थे।

सिकन्दर के आक्रमण के पूर्व भारत छोटे–छोटे गणराज्यों में विभाजित था। विश्वविजेता बनने की इच्छा से सिकन्दर ने भारत पर आक्रमण किया। उस समय आचार्य चाणक्य ने सभी गणराज्यों को संगठित करने का महत्वपूर्ण कार्य किया। मगध सम्राट से सिकन्दर के विरूद्ध सामरिक सहायता की याचना करने पर धमण्ड में चूर धनानन्द ने आचार्य का अपमान किया था। इसी अत्याचारी सम्राट को पदच्युत करने तक अपनी शिखा में गांठ नहीं लगाऊँगा ऐसी प्रतिज्ञा आपने की थी। नन्दवंश का विनाश करके चन्द्रगुप्त को गान्धार से लगाकर समस्त उत्तरापथ और दक्षिण में सिन्धु तट तक महान चक्रवर्ती राज्य का सम्राट आपने बना दिया थां।

इतने बड़े साम्राज्य के महांमन्त्री होने पर भी आपका रहन–सहन विरक्त साधुओं जैसा ही था। मुद्रा राक्षस नाटक के एक श्लोक अनुसार उनके जीर्ण–शीर्ण कुटियानुमा झोपड़े में एक ओर गोबर के उपलों को तोड़ने के लिए एक पत्थर रखा हुआ था। दूसरी ओर शिष्यों द्वारा लाई गई कुशा (घास) का ढ़ेर रखा था। छत पर समिधाएं सूखने के लिए डाली गई थीं, जिसके भार से छत झुक गई थी।

आचार्य चाणक्य कुशल राजनीतिज्ञ एवं कूटनीतिज्ञ थे। राजनीति में साम, दाम, दण्ड, भेद नीति के समर्थक थे। वे एक चतुर चिकित्सक एवं रसायनशास्त्र के ज्ञाता थे। अर्थशास्त्र में अनेक रासायनिक शास्त्रास्त्रों का निर्माण एवं प्रयोग विधि देखने को मिलती है। इन शास्त्रार्थों के द्वारा अग्निकाण्ड, मूर्ख, जागरण, निद्रा, आलस्य, उन्माद और भ्रमादि उत्पन्न किए जा सकते हैं।

आचार्य चाणक्य द्वारा लिखे गए साहित्य में "कौटिलीय अर्थशास्त्र" सर्वाधिक प्रसिद्ध ग्रन्थ है। इसके अलावा 2. वृद्ध चाणक्य, 3. चाणक्य नीतिशास्त्र, 4. लघु चाणक्य 5. चाणक्य राजनीतिशास्त्र आदि ग्रन्थों की आपने रचना की है। आज भी आचार्य द्वारा लिखित ग्रन्थ "कौटिलीय अर्थशास्त्र" राजनीति विषय की विश्वश्रेष्ठ पुस्तक है।

www.thearyasamaj.org

तीर्थ स्नान क्या ?

– प्रकाश आर्य, महू

जीवन में अज्ञानरूपी अन्धेरा जीवन दर्शन को छिपा देता है। उसका ही परिणाम होता है मनुष्य किसी बात से, जैसी वह है उसे वैसा नहीं देख पाता और भटक जाता है।

मानव जीवन में अनेक विचारधारा और मान्यताएं ऐसी हैं जिनके सही स्वरूप से हमारा परिचय नहीं है किन्तु उसके नाम से प्रचलित विचारधारा में हम विश्वास करके जी रहे हैं। इस विषय पर सबसे पहले हम तीर्थ पर विचार करते हैं। तीर्थ को हम कैसे मान रहे हैं और मानना कैसे चाहिए।

तीर्थ का अर्थ हम किसी पवित्र नदी, कुण्ड, जलाशय या प्रवाहित किसी धारा में स्नान करने को समझते हैं।

हमारी मान्यता है कि ऐसी किसी धार्मिक भावना से प्रसिद्ध नदी, कुण्ड, सरोवर में स्नान कर लेने से पुण्य मिलता है, पाप दूर हो जाते हैं, जीवन पवित्र हो जाता है।

इतना ही नहीं हमारे पूर्वज जो अब इस संसार से बिदा ले चुके हैं, कहीं जन्म ले चुके हैं, देह त्याग चुके हैं उनकी मृत्यु के पश्चात उनकी आस्थियॉं (चिता में जलाकर बची राख व कुछ हड्डियों के टुकड़े) जिन्हें फूल भी कहते हैं यदि उनको पवित्र नदी में, तालाब में डाल दिया जावे तो उन दिवंगत व्यक्तियों को भी मुक्ति मिल जाती है, ऐसी भी मान्यता है।

फिर किसी खास समय, विशेष दिन या पर्व पर स्नान करने का तो और भी बड़ा महत्व है। ग्यारस, अमावस्या, पूर्णिमा आदि ऐसे दिनों में स्नान का बड़ा भारी महत्व बताया गया है।

वास्तव में आज दुनिया में सबसे बड़ा व्यापार धर्म की आड़ में धर्म के नाम पर चल रहा है। धर्म के नाम पर कोरी आस्था व विवेक हीन मान्यता चल रही है इसमें ज्ञान व तर्क को कोई स्थान नहीं है। धर्म और ईश्वर को लेकर मानव समाज में प्रायः भेड़ चाल दिखाई देती है।

इसका लाभ लेने के लिए धर्म के नाम पर वास्तविकता से हटकर अपने लाभों की प्राप्ति के लिए तीर्थ का महत्व बढ़ा–चढ़ाकर बताया गया और मात्र जल स्नान से ही सारे पाप, दुःख कष्टों से मुक्ति और पुण्य प्राप्ति बता दी। किन्तु ज्ञान से रिक्त धार्मिक आस्था में बहकर पुण्य कमाने का सरल, सस्ता, बिना जीवन पवित्रता के, कर्मों के फल की अवहेलना करके यह मार्ग सबको सहज लगा और इसके प्रति जन सामान्य आकर्षित हो गया। एक महत्वपूर्ण बात है इस पर ध्यान देवें, ज्ञान विहीन मान्यता, अन्ध श्रद्धा है वह कभी लाभकारी नहीं होती, भ्रम में ही भटकाते रहती है।

www.thearyasamaj.org

इसलिए तीर्थ स्थान मानने के पहले हम तीर्थ का अर्थ समझ लें कि तीर्थ किसे कहा –

जनः येन तरति तत् तीर्थम् जिससे जीवन तर जावे, जीवन उन्नति हो जावे वह तीर्थ है।

यह जीवन दो तत्वों से बना है, एक शरीर, दूसरा आत्मा।

शरीर जड़ है वह स्वयं कुछ नहीं कर सकता, शरीर के अंग आत्मा के बिना कोई महत्व नहीं रखते, उनका अस्तित्व ही नहीं रह सकता। शरीर सेवक और आत्मा स्वामी है। सुख–दुःख–मोक्ष का संबंध शरीर से नहीं आत्मा से है, किए गए प्रत्येक कर्मों का फल जन्म–जन्मान्तरों तक आत्मा को भोगना होता है। कर्मों का फल इसी जन्म में भोग कर समाप्त नहीं होता किन्तु शरीर का अस्तित्व कुछ काल के लिए होता है और आत्मा कभी मरती ही नहीं, उसकी यात्रा अनन्त है। यात्रा अनन्त होने से ही वह कर्म फलों को कई जन्मों तक भोगती है। कर्म का संबंध आत्मा से है शरीर से नहीं। शरीर तो स्वामी (आत्मा) के लिए कार्य करता है। जैसे सेठ की ओर से काम करने वाले नौकर को व्यापार की लाभ हानि से कोई मतलब नहीं होता। काम भले ही वह करे किन्तु हानि का संबंध मालिक से होता है। इसलिए वैसे ही कर्मफल शरीर नहीं आत्मा भोगती है।

जीवन उन्नति ज्ञानमय, स्वाध्याय, सत्संग से, सतकर्मों से होती है और यह विषय आत्मा का है, शरीर का नहीं। इसलिए पाप पुण्य का माध्यम आत्मा है शरीर नहीं। आत्मा तो शरीर से काम करवाती है, धर्म, अधर्म करने का माध्यम शरीर है परन्तु आदेश आत्मा देती है।

आत्मा शुद्ध, पवित्र और ज्ञानयुक्त होने से ही जीवन का उद्धार होगा, जीवन उन्नत होगा, धर्म की ओर प्रेरित होगा, पुण्य की प्राप्ति होगी।

अब विचार करें जल स्नान से शरीर स्वच्छ होगा या आत्मा ?

संसार के महान विचारक, धर्मवेत्ता आचार्य मनु कहते हैं –

अभ्दिर्गात्राणि शुध्यति मनः सत्येन शुध्यति।
विद्या तपोभ्यां भूतात्मा, बुद्धिर्ज्ञानेन शुध्यति।।

अर्थात् – पानी से शरीर, सत्यता से मन, विद्या और तप से आत्मा तथा सत्य ज्ञान से बुद्धि की शुद्धि होती है। वस्त्र, वस्तु, शरीर की बाहरी शुद्धि तो पानी से हो सकती है किन्तु आत्मिक शुद्धि का तो कुछ और तरीका बताया है। पानी को तीर्थ मानने वालों को श्री भागवत पुराण 85 स्कंध श्लोक 10 में गधा कहा गया है।

विश्व प्रसिद्ध दार्शनिक आचार्य चाणक्य कहते हैं –

www.thearyasamaj.org

तीर्थेषु पशुयज्ञेसु काष्ठ पाषाण मृण्मये।
प्रतिमायां मनोयेषां ते नराः मूढ़ चेतसः।।

कहा गया, जल तीर्थ को ही सबकुछ मानने वाले व्यक्ति मूर्ख से भी मूर्ख हैं।

यह भी महत्वपूर्ण बात ध्यान देने योग्य है – मनुष्य को उसके द्वारा किए गए शुभ या अशुभ कर्म का ही फल भोग के रूप में प्राप्त होता है और वह भोग जब तक भोगना पड़ते हैं जब तक उनके फल पूरे न हो जावें।

हमारे कर्मों के अनुसार उन कर्मों के फल देना ईश्वर का कार्य है। ईश्वर का कार्य पूर्ण निष्पक्ष तथा त्रुटि रहित है उसमें कोई भी किसी भी प्रकार का परिवर्तन या हस्तक्षेप नहीं कर सकता। फिर स्नान पूजा–पाठ से उसके न्याय में अन्तर नहीं आ सकता उसकी न्याय व्यवस्था अटल है।

परन्तु तीर्थ का बड़ा महत्व है परन्तु तीर्थ वही जिससे आत्मा की बद्धि, ज्ञान वृद्धि, पाप कर्मों से मुक्ति, पुण्य के प्रति भावों का सृजन हो। यह ज्ञान, स्वाध्याय, सत्संग से संभव है, कहा गया –

सत्संग परं तीर्थ, सत्संग परं पद्म।
तस्मात् सर्वं परितज्य सत्संग सततं कुरू।।

सत्संग तो परम तीर्थ है परम् स्थान है, उसे कभी छोड़ना नहीं चाहिए। ऐसा क्यों कहा, इस पर ध्यान देना चाहिए। सत्संग से सत्य मार्ग, सत् ज्ञान की प्राप्ति होती है, आत्मोन्नति होती है इसलिए इसे तीर्थ कहा।

सत्य तीर्थं, क्षमा तीर्थं तीर्थं मिन्द्रिय निग्रह,
सर्वभूत दया तीर्थं, तीर्थ मार्जमेव च,
ज्ञान तीर्थं तपस्तीर्थं कथितं तीर्थं सप्तकं।

अर्थात् – सत्य बोलना, क्षमाशील होना, कर्मेद्रिय व ज्ञानेन्द्रियों को वश में रखना, सब प्राणियों पर दया, सरलता का जीवन ज्ञानमय व तपस्वी जीवन में सात प्रकार के तीर्थ है।

कहीं पर भी जल स्नान को तीर्थ नहीं कहा गया। किन्तु हम न जाने किस मान्यता व अन्ध श्रद्धा में पानी के स्नान को ही तीर्थ समझकर भटक रहे हैं।

नदी, पहाड़, जंगल, ये स्वास्थ और प्रसन्नतादायक है। इन स्थानों पर स्वमेव, मन पर आध्यात्मिक वातावरण निर्मित होता है। किन्तु उन स्थानों पर जाने से ही नहीं, उन स्थानों पर जाकर एकान्त में ध्यान, तप, स्वाध्याय, सत्संग करके जीवात्मा की उन्नति करने से उनका लाभ है।

नदी स्नान करने से ही यदि पापों से, कष्टों से मुक्ति मिल जाती तो उसके किनारे पर रहने वाले तो कष्टों से दूर और स्वर्ग प्राप्त करेगें वे

www.thearyasamaj.org

दुःखी क्यों रहेगें ? किन्तु ध्यान से जाकर देखिए, प्रायः तीर्थ स्थानों पर रहने वाले दुकानदार, पण्डे, पुजारी, कितने ठग होते हैं इसका अनुमान वहां जाकर लगता है। जो नित्य प्रति उस पवित्र नदी के पानी का उपयोग खाने–पीने, नहाने में कर रहे हैं उनकी आत्मा शुद्ध नहीं हुई तो एक–दो बार स्नान से आपको लाभ मिल जावेगा, यह सोचना कहां तक उचित है ?

हॉ नदियों का, तालाबों का स्वच्छ जल जो वनस्पतियों व खनिजों से युक्त है, उसके स्नान से स्वास्थ को लाभ अवश्य मिलता है, इसलिए उनका स्नान शरीर के लिए लाभदायक है किन्तु आत्मोन्नति के लिए किंचित भी नहीं।

स्वामी दयानन्द –

मुस्लिम जज के बंगले पर व्याख्यान

इस बार जब स्वामी काशी में आये तब सर सैयद अहमद खॉ वहां के सब जज थे। उन्होंने अपने बंगले पर स्वामी का व्याख्यान कराया जो ईश्वर की प्राप्ति के संबंध में था। उन्होंने ही स्वामीजी को काशी के कलेक्टर मिस्टर सेक्सपीयर से भी मिलवाया जो स्वामीजी से मिलकर और धर्म संबंधी वार्तालाप करके बड़े प्रसन्न हुए। सभी विद्वान स्वामीजी की विद्वता पर मुग्ध थे।

एक अदभुत कौतुक

एक दिन स्वामी ध्यान से निवृत्त होकर हंसते हुए बाहर आये। पं. सुन्दरलाल ने हंसने का कारण पूछा तो स्वामीजी ने कहा कि थोड़ी देर ठहरिये मैं आपको एक कौतुक दिखाऊँगा। एक आदमी मेरी ओर आ रहा है। थोड़ी देर बाद एक मनुष्य आया और उसने कुछ मिठाई स्वामीजी के आगे रखकर खाने की प्रार्थना की। स्वामीजी ने कहा कि थोड़ी सी मिठाई तुम भी ले लो। पहिले तुम्हें ही खानी पड़ेगी। यह सुनकर वह कॉपने लगा, क्योंकि वह मिठाई विषक्त थी। पं. सुन्दरलाल ने उस आदमी को पकड़ा, परन्तु स्वामीजी ने उसे छुड़वा कर क्षमा कर दिया। फिर उसमें से थोड़ी सी मिठाई एक कुत्ते को खिलाई। कुत्ता चक्कर खाकर गिरा और तुरन्त मर गया।

क्या अदभुत कौतुक था ? स्वामीजी ने पहले जान लिया, विष पूरित मिष्ठान्न बिना देखे पहचान लिया।

www.thearyasamaj.org

बोध कथा –

कौन बड़ा

एक बार वाणी, चक्षु, कान, मन और प्राण में अपनी–अपनी श्रेष्ठता को लेकर विवाद छिड़ गया। हर कोई अपने को बड़ा कहता था। काफी समय इसमें ही गुजर गया। फिर भी इस प्रश्न का हल नहीं हुआ।

फिर इन्द्रियों ने कहा – इस विवाद का निपटारा करने के लिए प्रजापति के पास चलना चाहिए। वह इसका समाधान कर देगें। इन्द्रियॉ प्रजापति के पास पहुॅची।

इन्द्रियों ने विवाद की जानकारी प्रजापति को दी। प्रजापति बोले – तुम में से जिसके न रहने पर शरीर माटी हो जाए, वही सर्वश्रेष्ठ है।

सबसे पहले वाणी ने शरीर को छोड़ दिया। फिर भी शरीर की गतिविधियों में खास फर्क नहीं आया। सालभर बाद वाणी लौटी, उसने देखा, सोचा – मुझ वाणी के न रहने पर भी शरीर पहले की तरह कार्य कर रहा है। उसका चेहरा लटक गया।

अब चक्षु ने शरीर छोड़ा। उसके न रहने पर मनुष्य को दिखाई देना बन्द हो गया। साल बीता, चक्षु ने देखा – शरीर सामान्य है। सोचा मेरे न रहने पर आदमी को विशेष फर्क नहीं पड़ा, मन मारकर उसने दोबारा शरीर में प्रवेश किया।

अब कान ने शरीर छोड़ा। फिर भी शरीर पहले सा ही रहा। साल भर बाद कान लौटा तो हैरान था, कारण शरीर की गतिविधियॉ ज्यों की त्यों थीं। उसने पूछा – मेरे बिना तुम जिन्दा कैसे रहे ?

जैसे बहरा आदमी रहता है। आदमी बोला।

फिर मन ने शरीर को छोड़ा, एक साल बाद लौटा तो उसे जवाब मिला, बच्चे मन के न रहने पर सिर्फ मानसिक विकास नहीं कर पाते, लेकिन अन्य कार्य तो करते हैं। यह सुन मन भी मन मारकर शरीर में जा बैठा।

जब बारी आयी प्राण की, वह शरीर से निकलने लगा तो इन्द्रियॉ डगमगाने लगीं। शरीर खतरे में पड़ गया। इन्द्रियॉ घबरा गई। उन्होंने प्रार्थना की – प्राण आप हमें छोड़कर न जाऍ, आप चले गए, तो हमारा क्या होगा ? आप ही हममें सर्वश्रेष्ठ हैं।

प्राण ने कहा – ठीक है, अब मैं शरीर नहीं छोड़ूॅगा। यह सुन इन्द्रियों ने चैन की सॉस ली।

www.thearyasamaj.org

प्रेरणा का स्त्रोत

दीपावली पर्व

— डॉ. सोमदेव शास्त्री, मुम्बई

हमारा देश पर्वों का देश है वर्ष में किसी न किसी रूप में हम इन्हें मनाते रहते हैं। मुख्य रूप से यह त्यौहार मनाने का कारण महापुरूषों से संबंधित किसी घटना के कारण, ऋतु परिवर्तन के समय पर अथवा राष्ट्रीय, सामाजिक, धार्मिक धारणाओं के कारण या नई फसलों के आने पर मनाए जाते हैं।

पर्व मनाने का जब तक कारण ज्ञात न तब तक उस पर्व का हमारा मनाना मात्र ऊपरी दिखावा ही होगा। सही कारण ना जानने से कहीं—कहीं उसमें विकृति आ रही है हम शुभ अवसर पर अशुभ या अनुचित कृत्य करने लगे हैं। जैसे होली पर शराब, भांग का सेवन, फूलों के रंग के स्थान पर कीचड़, डामर, रासायनिक रंग, पेन्ट आदि क्षति कारक पदार्थों का प्रयोग। इसी प्रकार दीपावली पर जुआ खेलने का प्रचलन।

वर्ष में बारह पूर्णिमा और बारह अमावस्या होती है। अश्विनी पूर्णिमा (शरद पूर्णिमा) को चन्द्रमा का सबसे अधिक प्रकाश होता है तथा कार्तिक अमावस्या (दीपावली को सबसे अधिक घना अन्धकार होता है) घने अन्धकार को दूर करने का प्रयत्न मनुष्य दीपमाला (दीप पंक्ति) के द्वारा करता है क्योंकि परमेश्वर के बनाये हुए दीपक सूर्य—चन्द्रमा के सामने मनुष्य की दीपक जैसी स्थिति है।

वर्षा ऋतु के बाद जब नया अनाज कृषक के घर आता है तो वह अनाज की प्राप्ति के साधन बैल, गाय, मजदूरादि का सम्मान और पूजादि करता है। इसी प्रकार व्यापारी व्यापार में जिन कर्मचारियों के माध्यम से धन कमाता है उनका सम्मान भी इस दिन करता है जिससे वे पूरी मेहनत और निष्ठा से व्यापार कार्य में लगे रहे। धन की प्राप्ति के साधन मशीन इत्यादि की देखभाल, मरम्मत, रंग रोगनादि इस पर्व पर कराया जाता है। जिससे पूरे वर्ष तक मशीन ठीक तरह से चलती रहती है। उसी का विकृत रूप मशीनों की पूजा करना, अगरबत्ती जलाना, उन पर तिलक करना, नारियल फोड़ना इत्यादि प्रचलित हो गया है। धन जिन साधनों से प्राप्त होता है। उनका तो सम्मान किया ही जाता है। किन्तु जिस परमात्मा की महती कृपा से मनुष्य अन्न और धन प्राप्त करने के योग्य बना है। उसको भी धन्यवाद देना उसके प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मनुष्य का कर्तव्य है। इसी दृष्टि से परमात्मा की पूजा, लक्ष्मी के रूप में प्रचलित हो गई है। परमात्मा का एक नाम लक्ष्मी भी है। उसकी उपासना करना, उसके प्रति आभार प्रकट करना, उसको धन्यवाद देने का परिवर्तित रूप आज लक्ष्मी पूजा प्रचलित हो गया है। परमात्मा के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिये

www.thearyasamaj.org

घर–घर में इसके विशेष यज्ञ किये जाते हैं। इसका परिवर्तित रूप यह हो गया है कि जब तक भगवान को न खिलाये, भोग न लगेगा। तब तक हमें नया अन्न नहीं खाना चाहिए। इसलिये नयी मक्का जब आती है। तब किसान सबसे पहले पांच मुट्ठी मन्दिर में भगवान के भोग के लिये ले जाता है और उसके बाद दूसरे दिन खाना प्रारंभ करता है। दीपावली को अनाज के नये दाने देवी देवताओं के सामने अग्नि जलाकर घी के साथ उन्हें इस विश्वास के साथ डालता है कि जिस भगवान की कृपा से हमें अन्न प्राप्त हुआ है, उसे भोग लगाकर खयेगें। इस तरह यज्ञ करके नया अन्न खाना शुरू करता है। इस प्रकार परमेश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिये जीवन में अन्धकार को दूर करके प्रकाश फैलाने के लिये दीपावली का पर्व मनाया जाता है।

आर्यों के लिये इस पर्व का महत्व और भी अधिक है क्योंकि इसी दिन सारे संसार में अविद्यारूपी अन्धकार को दूर करके मानव जीवन में प्रकाश फैलाते हुए युग निर्माता महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने नश्वर शरीर का परित्याग किया। ईश्वर और धर्म के नाम पर छाये हुए अविद्या रूपी बादलों को दूर करके वेद विद्या और ज्ञान का प्रकाश फैलाया और इस कार्य के लिये अपना बलिदान भी कर दिया। यह पर्व हमें प्रेरणा दे रहा है कि अज्ञान, पाखण्ड अन्ध विश्वास को दूर करके हम वेदों का प्रकाश फैलाने का अथक प्रयास करें। जिससे मनुष्यों का जीवन सुखदायी और वैभवशाली हो। पर्व हमें प्रेरणा, सन्देश (संबल) मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। इसलिये उसे समझकर मनाना ही वास्तविक रूप से पर्वों को मनाना हैं।

राजा भर्तृहरि की दृष्टि में

रूढ़िवादी, अन्धश्रद्धा में लिप्त केवल परम्परा को ही महत्व देने वालों के लिए भर्तृहरि लिखते हैं।

प्रसह्य मणि मुद्धरेन्मकर वक्त्र दंष्ट्रांतरात्
समुद्रमपि सन्तरेत् प्रचलदूर्मिमालाऽऽकुलम्।
भुजंगमपि कोपितं शिरसि पुष्पवद् धारयेत्
न तु प्रतिनिविष्ट मूर्खजनचित्तमाराधयेत्।।

भावार्थ – अपनी योग्यता से मनुष्य भले ही मगरमच्छ की दाड़ो में से मणि को निकाल ले, भले ही विशाल समुद्र की उत्ताल लहरों को चीरते हुए तैरकर पार चला जाए, कोधित विषधर को पुष्प की भांति अपने शीश पर धारण कर ले किन्तु मूर्ख पुरुष के मन को जो किसी विशेष वस्तु पर जम गया है, वहां से हटाना कठिन ही नहीं सर्वथा असंभव है।

www.thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द सरस्वती

– *प्रकाश आर्य, महू*

भारत भूमि प्राकृतिक सम्पदा सम्पन्न, महापुरूषों से गौरवान्वित और वर्तमान संसार की प्रथम संस्कृति से जुड़ी हुई है।

यहां जन्में अनेक महापुरूषों के ज्ञान का प्रकाश संसार में फैला और आज भी फैलता जा रहा है। यह ज्ञान चाहे आध्यात्म के रूप में, दर्शन के रूप में या अन्य सामाजिक कार्यों के कारण हो सकता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती की गणना भी एक महान विद्वान, समाज सुधारक एवं स्वतन्त्रता आन्दोलन के प्रणेता के रूप में की जाती है। यद्यपि आज बहुत से व्यक्ति महर्षि की जीवनगाथा से अनभिज्ञ हैं कई तो स्वामी दयानन्द और विवेकानन्द को एक ही मान बैठते हैं।

महर्षि का जीवन चरित्र पढ़ने पर पता लगता है कि इस महान विभूति ने किस प्रकार के कार्य किये।

वेद, जिन्हें धर्म गुरूओं ने विद्वानों ने धर्म का आधार माना था उसे यह समाज भूल चुका था। तरह–तरह की कपोल कल्पित गाथाएं जोड़ दी गई थी और उन्हें लुप्त होना बताया। पाताल में उन्हें जाना बता दिया था। कुछ विदेशी इन वेदों को गड़रियों के गीत के समान उपमा देते थे। किन्तु आदि शंकराचार्य के पश्चात एकमात्र स्वामी दयानन्द ने पुरूषार्थ कर वेदों के महत्व को समाज के समक्ष रखा। वेदों का महत्व समझाते हुए परमात्मा के इस ज्ञान की पूर्णता, सार्थकता और सत्यता पर गिरा हुआ परदा हटाकर भटकी हुई संस्कृति को पुनः सत्य पथ का दर्शन करा दिया।

संसार के महापुरूषों ने किसी असत्य मान्यता का पाखण्ड का, सामाजिक बुराईयों का खुलकर विरोध नहीं किया वे अपनी बात कहते गये, जमाना सुनता गया। इस कारण समाज में उनका विरोध नहीं हुआ। किन्तु महर्षि का विचार अपना था। वे मानते थे जब तक गलती का एहसास नहीं होगा उन्हें उससे हटाया नहीं जावेगा। तब तक सत्य काअसर होना संभव नहीं है। जैसे किसी पुराने खण्डहर के स्थान पर नया भवन बनाना हो तो पहले की बेकार सामग्री हटाना पड़ेगी तभी नए भवन का निर्माण संभव है। इस कारण महर्षि ने समाज में व्याप्त पाखण्ड, सामाजिक बुराईयों का खण्डन किया और उन्हें सनातन धर्म की मान्यता के विरूद्ध बताया। इस कारण ऐसे अनेक व्यक्ति जो इन बुराईयों में लिप्त थे, पाखण्ड फैलाकर अपने स्वार्थ सिद्धी करने में लगे थे वे स्वामी दयानन्द के विरोधी हो गए अनेक बार उनकी अव्हेलना और अपमान किया और प्राणघातक हमले तक किये।

www.thearyasamaj.org

किन्तु सत्य का दिवाना ईश्वर सन्देश फैलाने की धुन में व्यस्त समाज सुधार की धुन का पक्का, फक्कड़ वीर सन्यासी इन प्रहारों से रूका नहीं, हटा नहीं, घबराया नहीं वरन् उसके कार्य में और तेजी तथा दृढ़ता नित्य बढ़ती गई और आज जमाना उन सब कार्यों को मानता है कर रहा है, जिसके लिये महर्षि ने शंखनाद किया था। संक्षेप में एक नजर उन कार्यों पर डालें जो महर्षि ने प्रारंभ किये थे।

बाल विवाह गलत है, सतिप्रथा गलत है, जन्म से नहीं अपितुं कर्म से वर्ण या जाति को मानना चाहिए, छुआछूत एक अपराध है, विद्या प्राप्त करना सबका अधिकार है, बलि प्रथा अधर्म है, जीवित माता–पिता की सेवा, सन्तुष्टि ही सच्चा श्राद्ध है, तर्पण है, स्वदेशी राज्य सर्वोपरि होता है। परमात्मा एक है, सबकुछ परमात्मा की कृपा से प्राप्त है, परमात्मा ही सर्वोपरि है। निरंकार है, अजन्मा है, सर्वव्यापक है।

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए आदि अनेक विचार महर्षि ने समाज को दिए, जिनमें अधिकांश पर आज कानून बन गया।

समाज सुधार के कार्यों के साथ–साथ महर्षि ने आध्यात्म के मूल से समाज को जोड़ने का प्रयास किया। देश के अनेक राजा उनके शिष्य थे, जिन्हें महर्षि ने धर्म शिक्षा प्रदान की। महर्षि का यह विचार था कि यदि राजा सुधर जावे तो उसका प्रभाव प्रजा पर अवश्य होगा।

दुनिया ने कहा आगे बढ़ो परन्तु महर्षि दयानन्द का नारा था **"वेदों की ओर लोटो"**

महर्षि का ही सद्प्रयास कहा जायेगा जिसके कारण आज गायत्री मन्त्र, यज्ञ, यज्ञोपवीत व वेद पाठ जन साधारण द्वारा अपनाने के लिये हो गए अन्यथा केवल जाति विशेष परिवार में जन्म लेने वालों को ही इन्हें अपनाने का एकधिकार था। महिलाओं को वेद पढ़ने व शिक्षा पर तो बहुत बड़ी पाबन्दी थी किन्तु महर्षि के प्रयास से इन अज्ञानमयी मान्यता का अन्त हुआ और संसार में पहला कन्या गुरूकुल व पहली कन्या पाठशाला महर्षि के अनुयायी आर्य समाज के समर्थकों ने प्रारंभ की। आज संसार में अनेक देशों में वेद पाठी विद्वान जाकर सनातन धर्म प्रचार कर रहे हैं। यह महर्षि की ही कृपा है।

महर्षि के ही प्रयास का परिणाम है नारी जाति को शिक्षा के प्रति सहयोग प्रोत्साहन आज नारी शक्ति समाज, आध्यात्म व राजनीति के क्षेत्र में शीर्ष स्थानों पर पहुंच रही है।

www.thearyasamaj.org

भारत की स्वतन्त्रता में महर्षि का अद्भुत अनूठा योगदान है। मंगल पाण्डे की योजना से जब ब्रिटिश साम्राज्य 1957 की क्रान्ति से घबराया तो उसने बड़ी समझदारी से भारतीय अंग्रेज हुकुमत के लिये मानसिक रूप से सौहाद्रता व सहयोग का वातावरण निर्मित करने की चाल चली।

ब्रिटिश गव्हरमेंट द्वारा एक फरमान जारी किया गया कि हमने अपने सभी अधिकारियों, कर्मचारियों को यह आदेश जारी कर दिये हैं कि किसी भी भारतीय को उसके धार्मिक कार्यक्रमों में सामाजिक कार्यक्रमों में कोई रूकावट न डालें। जो ऐसा करेगा वह अधिकारी दंडित किया जावेगा। आगे कहा आप सब भारतीय अपने–अपने कार्यों के लिये स्वतन्त्र हैं।

हमें तो परमात्मा ने इस देश की सुख शान्ति व समृद्धता के लिये भेजा है। कुछ दिनों में हम यहां सुख शान्ति का वातावरण निर्मित करेगें प्रत्येक को आर्थिक रूप से सम्पन्न कर देगें आप हमारा सहयोग करें।

इस घोषणा से भारतीय अंग्रेजों के प्रति सद्भावना रखने लगे, भारतीयों की स्वतन्त्रता की भावना को ठण्डा करने में अंग्रेल सफल होते दिखने लगे।

तभी महर्षि ने यह सन्देश दिया विदेशी राजा कितना भी कृपा करने वाला क्यों न हो पर स्वदेशी राज्य से अच्छा नहीं होता।

महर्षि के अंग्रेजी हुकूमत में ऐसे प्रचार से जो एक बड़ी हिम्मत का कार्य था। डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने देहली की आम सभा में महर्षि के इस शौर्यपूर्ण कार्य की प्रशंसा की तथा स्वराज्य की ऐसी पहली घोषणा बताया।

महर्षि को अंग्रेज बागी फकीर के रूप में पुकारते थे। महर्षि ने स्वराज्य के लिये सन् 1960 में लगभग प्रयास तेजी से प्रारंभ किये। तात्या टोपे, लक्ष्मीबाई भी महर्षि के सम्पर्क में आये। पंजाब केसरी लाला लाजपतराय, काकोरी काण्ड के प्रमुख पं. रामप्रसाद बिस्मिल, भगतसिंह, मदनलाल ढ़ींगरा, वीर सावरकर महान के गुरू पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा, स्वामी श्रद्धानन्द आदि अनेक क्रान्तिकारी व स्वतन्त्रता संग्राम के नेता महर्षि के विचारों से प्रभावित हुए और मॉ भारती की आजादी में बलिदानी इतिहास के नायक बने।

इसीलिए तो डॉ. पटटाभिसीतारमैया ने कांग्रेस का इतिहास लिखते समय लिखा देश की आजादी के शहीदों में बहुत बड़ा भाग आर्य समाज के अनुयायियों का है।

www.thearyasamaj.org

महर्षि का कार्य समाज के लिए प्राणीमात्र के लिये सत्य सनातन धर्म के लिये व राष्ट्र के लिये था। इसका विरोध खूब हुआ। 16 बार जहर पान करना पड़ा और अन्त में दुष्टों की योजना से जहरपान से रूग्ण अवस्था में जीवन मृत्यु से जूझते हुए दीपावली अमावस्या की काली रात्रि में देहत्याग कर अमरत्व को प्राप्त किया।

ऐसे निष्काम कर्मयोगी को बार–बार नमन्। उनके चरणों में पुष्पांजलि अर्पित।

उनकी तुरबत पर नहीं एक भी दिया
जिनके खूं से जले चिरागे वतन।
आज जगमगाते मकबरे उनके
जिन्होंने बेचे थे शहीदे कफन।।

स्वास्थ के लिए

थोड़ा हंसिए भी

0 संतासिंह और बंतासिंह दोनों बहुत बड़े दुश्मन थे। ये दोनों एक ही बिल्डिंग में रहते थे। बंतासिंह सातवें माले पर रहता था और संतासिंह पहले। एक बार बिल्डिंग की लिफ्ट खराब हो गई। बंतासिंह ने सोचा कि आज संतासिंह को सबक सिखाया जाए। उसने संतासिंह को फोन करके खाने पर बुलाया। बेचारा संतासिंह जैसे तैसे सातवें माले पर पहुंचा और वहां जाकर देखा कि दरवाजे पर ताला लगा है और लिखा था कि कैसा उल्लू बनाया। संतासिंह को यह देखकर बहुत गुस्सा आया। उसने उस नोट के नीचे लिखा "मैं तो यहां आया ही नहीं था"

0 एक सरदार जी एक 25 मंजिला भवन की छत पर बैठे थे, तभी एक आदमी हांफता हुआ आया और कहने लगा कि संतासिंह आपकी पोती मर गई। सरदारजी ये खबर सुनकर बहुत हताश हो जाते हैं और बिल्डिंग से कूद पड़ते हैं। जब वो 20 वीं मंजिल तक पहुंचते हैं तो उन्हें ख्याल आता है कि उनकी तो कोई पोती ही नहीं है। 10 मंजिल आने पर ध्यान आता है कि उनकी तो शादी ही नहीं हुई है और जैसे ही जमीन पर गिरने वाले होते हैं कि ख्याल आता है कि उनका नाम तो संतासिंह है ही नहीं।

www.thearyasamaj.org

गो मूत्र के सरलतम घरेलु औषधीय उपयोग

प्रतिदिन 50 मि.ली. भारतीय गाय का मूत्र सूती कपड़े की आठ परत कर छानकर प्रातः खाली पेट पियें। इस गोमूत्र के सेवन से एक घण्टे पहले और एक घण्टे बाद में कुछ खायें–पियें नहीं। इस प्रकार देशी गाय का मूत्र सेवन करने से पाईल्स, लकवा (पक्षघात), पथरी (मूत्र पित्त), दमा, सफेद दाग, टॉसिल्स, हार्ट अटैक (कोलेस्ट्रॉल), श्वेत प्रदर, अनियमित माहवारी, गठिया, डायबिटीज (मधुमेह), किडनी के रोग, रक्तचाप (ब्लड प्रेशर), सिरदर्द, टी. बी., कैंसर आदि रोग ठीक हो जाते हैं।

जलोदर : गोमूत्र 50 मिली और आधा ग्राम हरड़ (एरंड, तेल में भुनी हुई) रात्रि को गो दुग्ध से लेने से बवासीर रोग नष्ट हो जाता है।

पाण्डु (कामला में) : गोमूत्र 50 मिली. पुनर्नवा मूल का क्वाथ 100 मिली. दोनों मिलाकर प्रातः–सायं लें। शीघ्र लाभ होगा।

जुकाम में : गोमूत्र 50 मिली. प्रतिदिन पान करने से एवं गापालनस्य लेने से पुराना जुकाम ठीक हो जाता है।

उदरकृमि : गोमूत्र 50 मिली. 1 ग्राम अजवाइन चूर्ण के साथ प्रातःसायं सेवन करने से एक सप्ताह में कृमि नष्ट हो जाते हैं। ,

संधिवात में : (ज़ोड़ों का दर्द व गठिया) महारास्नादि के क्वाथ के साथ गोमूत्र 50 मिली. प्रतिदिन सुबह–शाम सेवन करने से यह रोग ठीक हो जाता है।

दांत दर्द या पायरिया में : दांत व दाढ़ दर्द में गोमूत्र बहुत अच्छा कार्य करता है। जब दांत दर्द असह्य हो जाए तो गोमूत्र का कुल्ला करें। इससे बड़ा चमत्कारी प्रभाव होता है। गोमूत्र से प्रतिदिन कुल्ला करने पर पायरिया रोग समाप्त हो जाता है।

यकृत व प्लीहा की सूजन में : पांच तोला गोमूत्र में एक चुटकी नमक मिलाकर अथवा पुनर्नवा के क्वाथ में समान भाग गोमूत्र मिलाकर नियमित पीने से यकृत व प्लीहा की सूजन समाप्त हो जाती है।

चर्मरोग में : नीम, गिलोय क्वाथ के साथ दोनों समय गौमूत्र के साथ सेवन करने से रक्त दोष जन्य रोग नष्ट हो जाते हैं। जीरे को गोमूत्र के साथ बारीक पीसकर लेप करने व मालिश करने से चमड़ी सुवर्ण एवं रोगरहित हो जाती है।

www.thearyasamaj.org

बाल सन्देश स्तंभ

बच्चों, किसी भी बात की यदि सही ज

www.thearyasamaj.org

www.thearyasamaj.org

समाचार

अन्तर्राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान माधव बाग द्वारा स्वास्थ चर्चा

माधव बाग आयुर्वेद संस्थान जिसकी 160 शाखाएं देश व विदेश में संचालित की जा रही हैं। संस्था द्वारा ब्लड प्रेशर, डायबिटीज और हार्ट से संबंधित बीमारियों का आयुर्वेद के माध्यम से सफल उपचार किया जाता है।

संस्था द्वारा योग्य चिकित्सक व प्रोजेक्टर से स्क्रीन पर उपरोक्त बीमारियों की जानकारी उनको रोकने व उपचार के संबंध में बताया जाता है।

संस्था द्वारा आर्य समाज मल्हारगंज, आर्य समाज महू और आर्य समाज कोदरिया में इसका आयोजन किया। सैकड़ों व्यक्तियों ने इसमें भाग लेकर स्वास्थ संबंधी महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त की। अन्य किसी भी आर्य समाज में इस प्रकार की व्यवस्था की जा सकती है। इच्छुक समाजें सम्पर्क कर कार्यक्रम निश्चित करें। संस्था द्वारा दी जानकारी प्रत्येक व्यक्ति के लिए बहुत लाभप्रद है।

एक खुराक में डेंगू, मलेरिया, चिकन गुनिया का ईलाज

डॉ. दिनेश आर्य, इन्दौर द्वारा डेंगू, मलेरिया, चिकन गुनिया जैसी घातक बीमारियों से बचने के लिए अभी तक 25000 व्यक्तियों को दवा दी है। जिन्हें शत प्रतिशत लाभ हुआ।

इसकी विशेषता यह है कि एक खुराक दवा को लेने के पश्चात उपरोक्त बीमारियों से पूर्ण रूप से बचा जा सकता है।

आपके द्वारा अभी तक आर्य समाज के नाम पर ऐसे कई कैम्प लगाए जा चुके हैं। दवा का परिणाम शत प्रतिशत है और निःशुल्क प्रदान की जाती है।

आर्य समाज के माध्यम से इस प्रकार के कैम्प आर्य समाज मन्दिर में, नगर के किसी स्थान पर तथा ग्रामों में सेवा प्रकल्प के द्वारा लगाए जा सकते हैं। विशेष जानकारी हेतु सभा मंत्री से या डॉ. दिनेश आर्य (मोबाईल 09300845459) से सम्पर्क करे।

www.thearyasamaj.org

आर्य वीर दल प्रशिक्षण

आर्य वीर दल प्रशिक्षक श्री बालाराम एवं श्री प्रतापसिंह आर्य द्वारा नए ग्रामों में प्रशिक्षण दिया जा रहा है। श्री प्रतापसिंह आर्य 20 ग्रामों में नियमित शाखा लगाकर उसका निरीक्षण करेगें। वहीं बालाराम आर्य द्वारा विगत माह में बड़नगर, सुवासा, मौलाना, धार, कुआं में शाखाएं प्रारंभ की थी उनका पुनः निरीक्षण कर थान्दला और रतलाम में शाखा प्रारंभ करवा दी है। शीघ्र ही और प्रचारक बढ़ाकर प्रत्येक संभाग में आर्यवीर दल की गति विधियॉ बढ़ाई जावेगी।

विशेष – आर्य वीर निधि प्रति वर्ष आर्य वीर दल के नाम से आर्य परिवार के सदस्यों के द्वारा देने की व्यवस्था है। दशहरे से दीपावली तक यह राशि एकत्रित की जाती है जिसे आर्य वीर दल के लिए उपयोग किया जाता है।

अतः निवेदन है कि यह राशि अपनी–अपनी समाज में अपने परिवार के प्रत्येक सदस्य के नाम पर जमा करें। राशि प्रत्येक सदस्य कम से कम 5 रूपए होना चाहिए।

दयानन्द विद्यालय में आर्य वीर दल शिविर का समापन

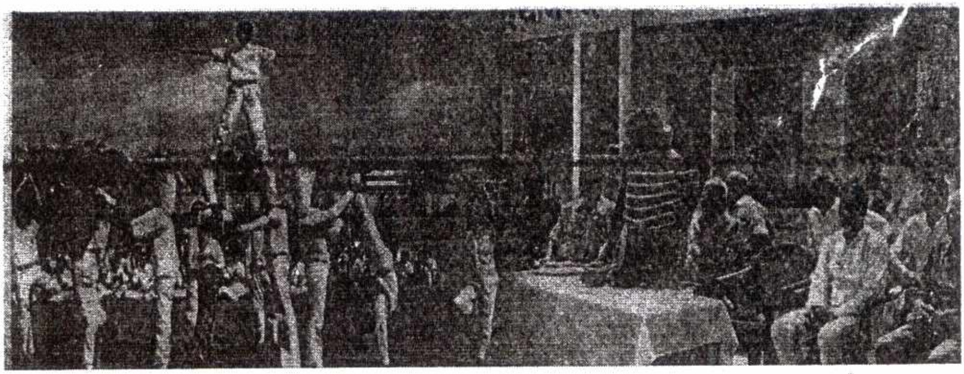

रतलाम– महर्षि दयानन्द वैदिक विद्यालय इन्दिरा नगर रतलाम में 10 दिवसीय आर्यवीर दल शिविर का भव्य समापन हुआ। आर्य प्रतिनिधि सभा भोपाल से आए प्रशिक्षक बालाराम आर्य ने विद्यार्थियों को प्रतिदिन व्यायाम, पी टी, जूडो–कराटे, योगासन व उत्तम संस्कारों का प्रशिक्षण दिया। समापन अवसर पर नगर विधायक श्री पारस सकलेचा उपस्थित थे। इसके पूर्व आर्यवीरों ने उपस्थित जनों के समक्ष जुड़ो–कराटे, व्यायाम तथा योगासनों का सुन्दर प्रदर्शन किया। इस अवसर पर नगर आर्य समाज के पदाधिकारी तथा पतंजलि योगपीठ से रमेश छीपा उपस्थित थे। विद्यालय के छात्रों एवं शिक्षिकाओं ने इस कार्यक्रम को काफी प्रेरणास्पद माना। अध्यक्षीय उद्‌बोधन भगवानदास अग्रवाल ने दिया। आभार प्रदर्शन विद्यालय की प्रधानाध्यापिका श्रीमती जैन व संचालन प्रमोद गुप्ता ने किया।

www.thearyasamaj.org

सामाजिक उन्नति के साधन
संगठन सूक्त

ओं सं समिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ ।
इळस्पदे समिध्यसे स नो वसून्या भर ।। १।।

अर्थ - हे प्रभो ! तुम शक्तिशाली हो बनाते सृष्टि को।
वेद सब गाते तुम्हें है कीजिए धन वृष्टि को ।

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम् ।
देवा भागं यथा पूर्वे सं जानाना उपासते ।। २।।

अर्थ - प्रेम से मिलकर चलो बोलो सभी ज्ञानी बनो,
पूर्वजों की भाँति तुम कर्तव्य के मानी बनो ।

समानो मंत्रः समितिः समानी-समानं मनः सह चित्तमेषाम्
समानं मंत्रमभि मंत्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि ।। ३।।

अर्थ - हों विचार समान सबके चित्त मन सब एक हो ।
ज्ञान देता हूँ बराबर भोग्य पा सब नेक हो ।

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः ।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सु सुहासति ।। ४।।

अर्थ - हो सभी के दिल तथा संकल्प अविरोधी सदा,
मन भरे हो प्रेम से जिससे बढ़े सुख सम्पदा ।

महामृत्युञ्जय मन्त्र :

ओ३म् त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्यो मुक्षीय मामृतात् ।।

शांतिमंत्र

ओं द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथिवी शन्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ँ शान्ति शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ।।

www.thearyasamaj.org

एम.पी.एच.आई.एन. 2003 12367

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/32/2012-14

वैदिक रवि के उद्देश्य व नियम

1. वैदिक रवि मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का आमुख पात्र है। 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' इसका प्रमुख उद्देश्य है।
2. यह पत्रिका माह की 27 तारीख को प्रकाशित होती है।
3. आगामी माह की 05 तारीख तक पत्रिका यदि पाठकों तक न पहुंचे तो डाक विभाग द्वारा या कार्यालय से पत्रिका के संबंध में जानकारी प्राप्त करें।
4. पत्रिका का मूल्य 20 रुपये प्रत्येक प्रति, वार्षिक सदस्यता शुल्क 200 रु. एवं आजीवन सदस्यता शुल्क 1000 रु है। आजीवन सदस्यता का तात्पर्य 15 वर्ष की अवधि तक के लिए सदस्यता से है।
5. सदस्यता शुल्क के ड्राफ्ट, चेक, मनीआर्डर आदि 'मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम भोपाल में देय होने चाहिए।
6. पत्रिका में छपवाने हेतु भेजे गये लेख, कवितायें आदि माह की 10 तारीख तक कार्यालय में पहुंच जाने चाहिए उसके बाद प्राप्त होने वाले लेख पत्रिका के विचारार्थ होंगे। विशेष पर्व हेतु भेजे लेख एक माह पूर्व भेजने का कष्ट करें। पत्रिका हेतु भेजे गये लेख साफ एवं स्वच्छ लिपि में कागज पर एक ही ओर लिखे हों यदि टंकित लेख हों तो ज्यादा अच्छा होगा।
7. पत्रिका में आर्य समाज तथा उसकी विचारधारा से संबंधित समाचार, सामाजिक, आध्यात्मिक, राष्ट्रीय हित के लेख, समालोचनात्मक निबंध आदि विषयों की सामग्री ही प्रकाशित की जाती है। चमत्कार, पाखण्ड युक्त लेख सामग्री स्वीकार्य नहीं होती।
8. पत्रिका हेतु भेजे गए लेख आदि को संपादित कर लघुकृत करने, छापने अथवा न छापने के सर्वाधिकार संपादक के है इस संबध में कोई पत्राचार स्वीकार नहीं होगा।
9. पत्रिका में छपे लेखों के लेखकों को उनके दिये हुए पते पर पत्रिका का वह अंक जिसमें लेख छपा है निःशुल्क भेजा जाता है। अप्राप्त होने पर वैदिक रवि कार्यालय या डाक विभाग से सम्पर्क करें।
10. पत्रिका की गुणवत्ता में सुधार एवं विकास हेतु आपके सुझाव सदैव आमंत्रित हैं।

प्रधान संपादक
वैदिक रवि
मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा
टी.टी. नगर, भोपाल (म.प्र.) 462003

मुद्रक, प्रकाशक, इन्द्र प्रकाश गांधी द्वारा कौशल आफसेट प्रेस, तलैया से मुद्रित कराकर मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय, तात्या टोपे नगर, भोपाल से प्रकाशित। संपादक प्रकाश आर्य

प्रति,

अवितरित रहने पर कृपया निम्न पते पर लौटायें
मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा
तात्या टोपे नगर, भोपाल 462003 (म.प्र.)